International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

Overseas Literature: Hindi on International Ground

Dr. S.N.Manjula

प्रवासी साहित्यःअंतर्राष्ट्रीय धरातल पर हिन्दी

डॉ. एस. एन. मंजुला

असोसिएट प्रोफेसर

जी.एफ.जी.सी., बंगारपेट,कोलार

भूमंडलीकरण से प्रवास की प्रक्रिया तथा प्रवासी हिन्दी साहित्य में विस्तार हुआ। आजादी से पूर्व हुए प्रवास के कारण आज कई देशों में प्रवासी भारतीय मूल के लोगों की है। मॉरीशस की आधे से अधिक जनसंख्या भारतीय मूल के लोगों की है। इसके अतिरिक्त दक्षिण अफ्रिका, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि में भारतीय मूल के लोगों की जनसंख्या एक तिहाई से भी अधिक है। इन देशों में भारतीय मूल के लोग सर्वोच्च पद पर भी आसीन हो चुके हैं। आजादी के उपरान्त गए प्रवासी भारतीय न केवल भारत की अर्थव्यवस्था में वरन हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में भी अपना अपूर्व योगदान दे रहे हैं।

प्रवासी साहित्यः अंतराष्ट्रीय धरातल पर हिन्दीः'– हिन्दी साहित्य में जिस प्रभावशाली रूप से प्रवासी हिन्दी साहित्य को गत दो–तीन दशकों में पहचान मिली है वह अद्वितीय है और इसका श्रेय जाता है प्रवास की प्रक्रिया में आई निरन्तरता, भूमंडलीकरण, विश्व बाजार, दूर संचार, कंप्यूटर–क्रांति के साथ–साथ विश्वभर में फैली हिन्दी के साहित्यकारों का विभिन्न माध्यमों से साहित्यिक जुडाव व विचार विमर्श है। प्रवासी भारतीय सम्मेलनों एवं विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने प्रवासी भारतीयों एवं प्रवासी हिन्दी साहित्य से भी लोगों को परिचित होने का मौका दिया है। हिन्दी साहित्य पर भी इसका सकारात्मक परिणाम पडा। पत्रिकाओं द्वारा प्रवासी अंक का निाकाला जाना, प्रवासी साहित्यकारों का सम्मेलन, प्रवासी पुरस्कार आदि प्रवासी हिन्दी साहित्य की सत्ता और महत्ता को इंगित करता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रवासी हिन्दी साहित्य में प्रवास प्रक्रिया का वैचारिक प्रारंभ उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की कहानी यह मेरी जन्मभूमि है से माना जाता है। प्रेमचंद एक अन्या कहानी शूद्रा मॉरीशस के गिरकिटिया मजदूरों के जीवन पर आधारित है। हिन्दी की पहली कालजयी कहानी चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की उसने कहा था में प्रवासी भारतीय सैनिकों की एक छवि प्रस्तुत की गई है, जोकि प्रथम विश्व युद्ध में राष्ट्रों की तरफ से जर्मन सेनाओं के विरूद्ध लड रही है। प्रेमचंद कृत सुप्रसिद्ध उपन्यास गोदान में भी धनिया–गोबर के बीच हुए वार्तालाप में मरीच देश का उल्लेख मिलता है जो मॉरीशस का ही अपभ्रंश रूप है।

विदेशी पृष्ठभूमि ने हिन्दी रचना क्षेत्र को विस्तृत फलक दिया है। प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से हिन्दी और उसके साहित्य को वैश्विक आधार दिया है और भारत में भी हिन्दी साहित्य की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अमरिका में प्रवासी हिन्दी साहित्यकार देवी नागरानी ने प्रवासी हिन्दी साहित्य के महत्व को बताते हुए लिखा है कि हिन्दी का साहित्य विश्व में हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीयता को बुलंदी के साथ स्थापित कर रहा है, इस बात में कोई शंका नहीं। चाहे वह मॉरिशस का हिन्दी साहित्य हो या अमरिका का, सूरीनाम का हो या इंग्लैंड का। हिन्दी साहित्य की हर धारा उसी में मिलकर एक राष्ट्रीय भाषा हिन्दी की सरिता बनकर बहेगी, तभी वह सेलाब अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर अपना स्थान पा सकेगा। यमुनानगर प्रवासी हिन्दी सम्मेलन में पूर्णिमा वर्मन ने कहा–हिन्दी साहित्य को विश्व के कोने–कोने में पहुँचाने और विश्व का कोना–कोना हिन्दी साहित्य में लाने का महत्वपूर्ण काम केवल प्रवासी साहित्य के जरिए संभव है।

हिन्दी को अंतराष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों के योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। प्रवास में लिखे जा रहे हिन्दी साहित्य की अपनी ही एक अलग संवेदना है। उसमें भारतीय मन है और साथ ही उसकी अपनी विशिष्ट प्रवासी सोच है। वस्तुतः प्रवासी हिन्दी साहित्यकार संवेदन संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करते हैं। अतः प्रवासी हिन्दी साहित्यकार जब अपने घर–परिवार और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपने देश की मिट्टी से अलग होकर एक अन्य देशकाल और परिवेश में चला जाता है तो वहाँ उनके नए संस्कार बनते हैं, नए दृष्टिकोण बनते हैं। प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों की कृतियों में सोच, संवेदना, यथार्थपरक दर्शन के साथ संस्कृतियों की टकराहट और भूमंडलीकरण का दबाव दिखाई पडता है। प्रवासी हिन्दी साहित्य के मूल में जिस अकुलाहट, बेचैनी को महसूस किया जाता है उसे परंपरा एवं अपनी संस्कृति से कटने के संदर्भ में समझा जा सकता हैं। भारतीय एवं पश्चिमी संस्कृति के बीच झूलते प्रवासी भारतीयों के मानसिक द्वन्द्व का चित्रण प्रवासी हिन्दी साहित्य में देखा जा सकता है।

मॉरीशस में हिन्दी उपन्यास का प्रारंभ कृष्णलाल बिहारी के उपन्यास पहला कदम से माना जाता है। कालान्तर में अभिमन्यु अनत का और नदी बहती रही प्रकाशित हुआ। उनके अन्य उल्लेखनीय उपन्यास हैं–आन्दोलन, एक बीघा घर, जम गया सूरज, तीसरे किनारे पर, चौथा प्राणी आदि उल्लेखनीय हैं। कमल किशोर गोयनका इन्हें उपन्यास सम्राट तथा मॉरीशस के प्रेमचंद जैसे विशेषणों से विभूषित करते हैं। सूरीनाम, फिजी, मॉरीशस, कैरेबियन आदि देशों में बँटे प्रवासी भारतीयों ने लेखन के माध्यम से वहाँ देशी संस्कृति को संभाल कर रखा है। प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों ने न केवल विदेशों में रह रहे भारतीय समाज के जीवन शैली को अभिव्यक्त किया है बल्कि उनके जीवन संघर्षों और सुख–दुख पर भी कलम चलाई है।

फिजी में औपचारिक एवं मानक हिन्दी का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र के आलावा शादी, पूजन, सभा आदि अवसरों पर भी होता है। फिजी के संविधान में हिन्दी भाषा को मान्यता प्राप्त है। कोई भी व्यक्ति सरकारी कामकाज, अदालत तथा संसद से भी हिन्दी भाषा का प्रयोग कर सकता है। फिजी के हिन्दी उपन्यास को समृद्ध करनेवालों में जोगिन्द्र सिंह कंवल का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने फिजी में प्रवासी भारतीयों के जीवन को आधार बनाकर कुल चार उपन्यास सवेरा, धरती मेरी माता, करवट तथा सात समुद्र पार की रचना की है। सवेरा और सात समुद्र पार का संबंध फिजी गए प्रवासी भारतीयों के जीवन से संबंधित है। सवेरा का कथानक गिरमिटिया मजदूर के रूप में फिजी भेजे गए लोगों से संबंधित है जो फिजी के गन्ने के खेतों में और चीनी की मिलों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में काम करने के लिए अभिशप्त हैं। उन्हें जिन शारीरिक एवं मानसिक यंत्रणा, शोषण तथा अंग्रेजों के वफादार भारतीयों की पाश्विकता का शिकार होना पडा, उन सबका मर्मस्पर्शी चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। सात समुद्र पार विदेशी चकाचौंध से प्रभावित निर्मला के फिजी पहुँचने पर उसकी दुर्दशा की कहानी है जो जिन्दा रहने के लिए पल–पल संघर्ष करती है। विवेकानन्द शर्मा का उपन्यास अनजान क्षितिज की ओर गिरमिटिया भारतीयों के जीवन पर आधारित है। कमला प्रसाद मिश्र, काशीराम कुमुद, महावीर मिश्र, बाबू हरनाम सिंह, बलिराम वशिष्ट, सरस्वती देवी, राघवानंद शर्मा सुखराम आदि फिजी के काव्य रचनाकार हैं। पदमेश गुप्त ने हिन्दी समिति एवं पुरवाई पत्रिका के माध्यम से हिन्दी को ब्रिटन में प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्षतः प्रवासी साहित्यकारों का महत्व इसलिए बढ जाता हैं क्योंकि उनकी रचनाओं में अलग–अलग देशों की विभिन्न परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है जिससे हिन्दी साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय विकास होता है। हिन्दी में रचे जा रहे प्रवासी साहित्य का अपना वैशिष्ट्य है जो उसकी संवेदना, परिवेश, जीवन दृष्टि तथा सरोकारों में दिखाई देता है। इस प्रकार प्रवासी हिन्दी साहित्य में किसी–न–किसी रूप में भारत विद्यमान है। प्रवासी हिन्दी साहित्य की अपनी अलग संवेदना, विशिष्ट प्रवासी सोच एवं दृष्टिकोण है जोकि संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करता है। प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों की कृतियों में सोच, संवेदना, यथार्थपरक दर्शन के साथ संस्कृतियों की टकराहट और भूमंडलीकरण का दबाव दिखाई देता है। भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति के बीच झूलते प्रवासी भारतीयों के मानसिक द्वन्द्व का चित्रण प्रवासी हिन्दी साहित्य में हुआ है। हिन्दी में रचे जा रहे प्रवासी साहित्य का अपना वैशिष्ट्य है जो उसकी संवेदना, परिवेश, जीवन दृष्टि तथा सरोकारों में दिखाई देता है। प्रवासी भारतीय समाज की सच्चाई को पूरी अन्तरंगता से उद्घाटन करने वाले बहुतेरे साहित्यकारों की बदौलत प्रवासी हिन्दी साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय विकास संभव हो सका है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 11, November 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ सूचीः

प्रवासी हिन्दी साहित्यः वैश्विक परिदृश्य–डॉ. नवनीत कौर।

प्रवासी साहित्य का सत्यः–डॉ. एम.फीरोज खान, अकरम हुसैन।

विश्व की हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ–डॉ.कामता कमलेश, भारतकोश।

.....